इकाई 6 ईश्वर की विभिन्न अवधारणाएं

रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 परिचय

6.2 ईश्वरवाद (थीज्म) और उसके विभिन्न प्रकार

6.3 बहुदेववाद या अनेकेश्वरवाद (पोलीथिज्म)

6.4 एकैकाधिदेववाद (हेनोथिज्म): कैथेनोथिजम (एकैकार्घ्याधिदेववाद), मोनोलैट्री (एक अर्घ्यधिअधिदेववाद)

6.5 द्वैतवाद (डायथिज्म)

6.6 एकेश्वरवाद (मोनोथिज्म)

6.7 देववाद (डीज्म)

6.8 एकतत्ववाद या एकत्ववाद (मोनिज्म)

6.9 सर्वेश्वरवाद (पेंथिज्म)

6.10 सर्वातिसर्वेश्वरवाद (पेनेंथिज्म)

6.11 आत्मदेववाद (ओटोथिज्म)

6.12 नास्तिकतावाद (निरीश्वरवाद)

6.13 अज्ञेयवाद (एगनोथिज्म)

6.14 सारांश

6.15 कुंजी शब्द

6.16 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

* डॉ. प्रीति रानी, सहायक प्राध्यापक, दर्शन विभाग, हंसराज महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय। अनुवाद– डॉ. प्रीति रानी, सहायक प्राध्यापक, दर्शन विभाग, हंसराज महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

6.17 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रकार के ईश्वर के अस्तित्व सम्बंधी विश्वासों और उनसे जुड़ी समस्याओं पर चर्चा करना है जो ईश्वर को दयालु, सर्व–कल्याणकारी, सर्वशक्तिशाली, लौकिक जगत का मौलिक स्रोत, निर्णायक और शासकीय सिद्धान्त रूप में विश्वास करने से उत्पन्न होती है।

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद विधार्थी

- ईश्वरवाद, निरीश्वरवाद, अज्ञेयवाद की अवधारणा पर चर्चा कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के ईश्वरवाद – अनेकेश्वरवाद, एकैकाधिदेववाद, द्वैतवाद, एकेश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद, सर्वातिसर्वेश्वरवाद, आत्मदेववाद का वर्णन कर सकेंगे;
- ईश्वर की विभिन्न अवधारणाओं के विकास के चरणों, अनेकेश्वरवादी से एकेश्वरवादी विश्वास तक का वर्णन कर सकेंगे;
- संसार में ईश्वर की अंतर्निहितता और पारलौकिकता के बीच अंतर कर सकेंगे।

6.1 परिचय

मनुष्य का ईश्वर में विश्वास उतना ही पुराना है जितना कि उसका संसार से सम्बन्ध। संसारिक कार्यों में, वह अक्सर खुद को इतना व्यस्त पाता है कि उसकी आकांक्षा, अभिलाषा और गतिविधियां, उसका अस्तित्व में आना और उससे बाहर निकलना, उसका सौभाग्य और दुर्भाग्य, उसका स्वास्थ्य और बीमारी अक्सर उसके नियंत्रण से बाहर लगते हैं। प्रकृति में होने वाली घटनाएं जैसे बारिश, हवा, बाढ़, अकाल, भूकंप और बदलते मौसम भी उलझन वाले और रहस्यमय लगते हैं। इन परिघटनाओं से यह विश्वास पैदा होता है कि मनुष्य इन सबके सामने बहुत छोटा और असहाय है। वह एक ऐसी शक्ति में विश्वास करने लगता है, जो न केवल उसके भाग्य को नियंत्रित करती है, बल्कि बड़े पैमाने पर दुनिया को भी नियंत्रित करती है। मानव हृदय में 'अनेकों के बीच एक' ऐसे सिद्धान्त का पता लगाने की एक अंतर्निहित इच्छा है, 'विशेषश के बीच 'सार्वभौमिक' और इस अस्थायी दुनिया में सीमित वस्तुओं के परिवर्तनशील चरणों की पृष्ठभूमि के बीच ऐसा कुछ जो स्थिर और स्थायी हो। मनुष्य के मन में किसी उच्च दैवीय शक्ति या ईश्वर के अस्तित्व से संबंधित अनेक प्रश्न आते हैं। धर्मशास्त्र (ईश्वर का अध्ययन) ऐसे सभी प्रश्नों से संबंधित हैः क्या कोई ईश्वर है? ईश्वर एक है या अनेक? क्या

आकाशीय प्राणी – देवता, देवदूत, आत्माएं और दैत्य मौजूद हैं? अगर ईश्वर है, तो अशुभ की समस्या क्यों है? क्या मनुष्य ईश्वर को समझा/जाना जा सकता है? क्या मनुष्य ईश्वर के साथ संवाद स्थापित कर सकता है? अनीश्वरवाद वह विचारधारा है जो इस विश्वास का प्रचार करती है कि ब्रह्माण्ड में किसी ईश्वर या किसी दैवीय शक्ति का अस्तित्व नहीं है। अज्ञेयवाद एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसके अनुसार परमेश्वर के अस्तित्व को जानना या प्रमाणित करना या अप्रमाणित करना असंभव है। ईश्वरवाद ब्रह्माण्ड के लिए ईश्वर या किसी दिव्य सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार करता है। ईश्वरवादी एक व्यक्तित्वपूर्ण और आत्म–चैतन्य देव में विश्वास करते हैं जो वात्सल्य और मैत्रीपूर्ण प्रकृति से परिपूर्ण होते हैं और व्यक्तिक जीवन को सार्वभौमिक सिद्धान्त के अनुरूप लाने के लिए प्रवृत होते हैं। कई धर्मशास्त्रियों का मानना है कि "ईश्वर –चेतना'' मानव मन में जन्मजात है। कुछ धर्मशास्त्रियों ने धार्मिक परिघटनाओं के अपने अध्ययन में दिखाया है कि मनुष्यों में "ईश्वरीय चेतना'' पहले पहल भय का अनुभव होने से आई थी। यहाँ, भय को "अलौकिक'' सत्ता के बोध रूप में देखा जा सकता है। "अलौकिक'' की इस खोज में ईश्वरवाद जीववाद के रूप में उभरा, फिर अनेकेश्वरवाद, फिर धीरे–धीरे एकैकाधिदेववाद में, और अंत में एकेश्वरवाद में विकसित हुआ। देववाद, सर्वेश्वरवाद और सर्वातिसर्वेश्वरवाद जैसे सिद्धान्तों को तत्वमीमांसीय सिद्धान्त के रूप में जाना जाता है, जो ईश्वर और जगत के बीच सम्बन्ध को दर्शाते हैं। दूसरी ओर ईश्वरवाद, अनीश्वरवाद, अज्ञेयवाद और प्रकृतिवाद मे ईश्वर के अस्तित्व की समस्या को दिखाया है। अनेकेश्वरवाद और एकेश्वरवाद ईश्वर की संख्या के प्रश्न पर भिन्न हैं। इस इकाई में हम इन विभिन्न ईश्वरवादी (आस्तिकवादी) सिद्धान्तों को विस्तार से देखेंगे।

6.2 ईश्वरवाद (थीज्म) और इसके विभिन्न प्रकार

ईश्वरवाद यह विश्वास है कि एक या एक से अधिक देवताओं का अस्तित्व है। भारतीय दर्शन में जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं उन्हे आस्तिक कहा जाता है । आस्तिक शब्द 'अस्ति' से बना है जिसका अर्थ है– '(विद्यमान) है'। पाश्चात्य दर्शन में ईश्वरवादी विचारधारा के लिये अंग्रेजी शब्द श्थीज्मश मिलता है। थीज्म शब्द ग्रीक शब्द 'थियोसश से बना है जिसका अर्थ है 'ईश्वरश। थीज्म शब्द का प्रयोग सबसे पहले राल्फ कडवर्थ (1617–1688) ने किया था। कडवर्थ ने ईश्वरवादी उन लोगों को कहा है, ''जो इस बात को स्वीकार करते हैं कि एक पूर्ण रूप से चैतन्य, प्रज्ञाशील सत्ता या आत्मा अनंत काल से सव्यम्भू अस्तित्व में है, जो अन्य सभी पदार्थों का कारण है।'' वे सभी व्यक्ति आस्तिक/ ईश्वरवादी हैं जो एक ईश्वर या कई देवताओं में विश्वास करते हैं। दुनिया की अधिकांशतः आबादी आस्तिक है। आस्तिकता अधिकांश धर्मों का मूल है। ईसाई धर्म, यहूदी धर्म, इस्लाम धर्म , हिंदू धर्म, सिख धर्म सभी आस्तिक धर्म हैं। प्रत्येक समुदाय के लोग जिस देवता या देवताओं को मानते हैं और जिस

तरह से अपनी मान्यताओं का पालन करते हैं, वह अलग–अलग है। यह ध्यान देने योग्य है कि कोई व्यक्ति जो आस्तिक है आवश्यक नहीं कि वह एक निश्चित धर्म का सदस्य हो।

निम्नलिखित में से किसी भी एक दृष्टिकोण पर विश्वास ईश्वरवाद के अंतर्गत आता है:

- बहुदेववाद या अनेकेश्वरवाद/बहुईश्वरवाद– अनेक ईश्वरों में विश्वास,
- एकैकाधिदेववाद – कई ईश्वर में विश्वास लेकिन जिसकी पूजा– अर्चना करना, उस समय उसकी प्रधानता मानना,
- द्वैतवाद – दो विरोधी वास्तविकताओं में विश्वास,
- एकेश्वरवाद– एक ईश्वर में विश्वास,
- देववाद– एक या एक से अधिक देवताओं में विश्वास, जो संसार में हस्तक्षेप नहीं करते
- सर्वेश्वरवाद– यह विश्वास कि ईश्वर और ब्रह्माण्ड एक ही हैं,
- सर्वातिसर्वेश्वरवाद– यह विश्वास कि ईश्वर ब्रह्माण्ड में सर्वव्यापी तो है, पर फिर भी उससे कहीं अधिक और उससे ऊपर है।

निम्नलिखित विश्वास ईश्वरवाद के अंतर्गत नहीं आते हैं:

- नास्तिकवाद/ अनीश्वरवाद – यह विश्वास कि कोई ईश्वर नहीं है और
- अज्ञेयवाद– यह विश्वास कि ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं, इस बात को प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

6.3 बहुदेववाद या अनेकेश्वरवाद (पॉलीथिज्म)

बहुदेववाद या अनेकेश्वरवाद शब्द का प्रयोग उस विश्वास को उजागर करने के लिये किया जाता है जिसमे ईश्वर की बहुलता को स्वीकार किया जाता है और/या उनकी पूजा की जाती है। पाश्चात्य दर्शन में हमें इस विश्वास के लिये पॉलीथिज्म शब्द मिलता है। पॉलीथीज्म ग्रीक शब्द 'पॉली' से बना है जिसका अर्थ है 'कई' और 'थियोस' जिसका अर्थ है 'ईश्वर'। एक अनेकेश्वरवादी व्यवस्था में किसी भी विशिष्ट ईश्वर को, पूरी तरह से अलग और असंबंधित समझने के बजाय एक सुसंगत देव– समूह के सदस्य के रूप में माना जाता है (जिसे पैनथियन कहा जाता है)। आम तौर पर प्रत्येक देव / ईश्वर एक विशेष गुण का प्रतिनिधित्व करता है, मानवता के किसी विशेष पहलू को प्रतिकत्व करता है, और/या प्रकृति

के किसी पहलू पर प्रबंधाधिकारित्व बनाए रखता है। इस प्रकार भूमि की उर्वरता, नदियों, स्वास्थ्य, क्रोध, सूर्य, वनस्पति, जीवन और मृत्यु के देवता हैं। अनेकेश्वरवाद में, कुछ प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले एक अनुयायी से अपेक्षा की जाती है कि वह एक विशेष ईश्वर से प्रार्थना करे, न कि उनसे जिनका उस क्षेत्र में प्रभुत्व नहीं है। देव–समूह के अन्य संरचनात्मक विचारों में प्रभुता का पृथक्करण शामिल है। कुछ अनेकेश्वरवादी प्रणालियों में एक ईश्वर अन्य ईश्वरों पर शक्ति और अधिकार में प्रमुख है, लेकिन सर्वोच्च नहीं है जो मनुष्यों से विशेष पूजा सुनिश्चित करे। कुछ अनेकेश्वरवादी प्रणालियों में ईश्वर स्वयं प्रकृति या भाग्य की अन्य शक्तियों के अधीन हो सकते हैं– सिर्फ इसलिए कि वे ईश्वर हैं इसका अर्थ यह नहीं है कि वे अलौकिक या पारलौकिक हैं। इस प्रकार, अनेकेश्वरवादी आमतौर पर ईश्वरीय साम्राज्य के भीतर श्रम और उत्तरदायित्व के विभाजन को प्रस्तुत करता है जैसे कि हम मानव संसार में देखते हैं।

ईश्वर की अनेकेश्वरवादी धारणा भारत के वैदिक कथानकों और मिस्र, रोम और स्कैंडिनेविया में पाए जाने वाले प्राचीन सिद्धान्तों में पाई जाती है। यूनानियों के अनुसार, ईश्वरों ने न केवल ब्रह्माण्ड के नियमों और व्यवस्था को बनाए रखा, बल्कि उन्होंने दुनिया की नैतिक व्यवस्था को भी बनाए रखा। यद्यपि अनेकेश्वरवादी प्रणालियाँ एक सुसंगत देव– समुदाय का निर्माण करती हैं, किन्तु वे पैनथियन के बाहर के ईश्वरों के अस्तित्व को भी स्वीकार करती हैं। अन्य संस्कृतियों और धर्मों के ईश्वरों की स्वीकृति के सम्बन्ध में आमतौर पर तीन अलग–अलग दृष्टिकोण देखने को मिलती हैं:

1. एक ही, अलग–अलग नामों के साथः ऐसा माना जाता है कि कुछ या फिर सभी अन्य ईश्वर वास्तव में वही हैं जिनकी वर्तमान में पूजा की जाती है, बस उन्हें अलग–अलग नामों से पूजा जाता है। कोई भी नया रूप या शक्तियाँ पुराने ईश्वरों में ही समाहित कर ली जाती हैं।

2. नए संयोजनः एक दृष्टिकोण में कुछ नए ईश्वरों को अपनाकर और उन्हें देव समूह के नए सदस्यों के रूप में शामिल कर लिया जाता है। इस तरह से समुदाय उत्तरोत्तर विकसित हो सकता है।

3. स्वीकृति लेकिन पूजा नहींः इस दृष्टिकोण में यह स्वीकार्य है कि अन्य ईश्वरों का अस्तित्व है, लेकिन किसी भी सक्रिय तरीके से उनकी पूजा नहीं की जाती है।

चूँकि अनेकेश्वरवादी व्यवस्थाएँ अन्य धर्मों और संस्कृतियों के ईश्वरों के अस्तित्व को स्वीकार करती हैं, अनेकेश्वरवाद में एकेश्वरवाद की तुलना में अधिक धार्मिक स्वतंत्रता मिलती है। अनेकेश्वरवाद विश्वास सभी स्थानीय और लोकप्रिय कथानकों को बढ़ावा देता है और उन्हे आत्मसात करता है। ''अनेक'' का विचार सभी प्रकार के विश्वासों, पूजा और धार्मिकता के लिए रास्ता खोलता है।

आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनी प्राकृतिक नियमों की समझ के साथ अनेकेश्वरवाद की संगति न होने के कारण इसका खंडन करता है। यदि वास्तविकता के सभी अलग–अलग पक्षों के प्रभारी वास्तव में अलग व स्वतंत्र ईश्वर हैं, तो प्राकृतिक नियमों के ऐसे ढाँचे की जो वास्तविकता के सभी अंशों पर समानरूप से लागू हो अनिवार्यता नहीं होनी चाहिए। भौतिकी के नियम रसायन विज्ञान पर लागू नहीं होंगे और रसायन विज्ञान के नियम जीव विज्ञान आदि पर लागू नहीं होंगे। यदि विभिन्न ईश्वर संभावित विपरीत उद्देश्यों पर काम करें, तो वैज्ञानिक व्यवस्था का कोई आधार नहीं होगा।

पुनश्चः ईश्वर की अनेकता में विश्वास से, जो प्रकृति के भयंकर पहलुओं से उत्पन्न होता है और जहां एक ईश्वर को दुसरे के विरूद्ध खड़ा है, धर्म के लक्ष्य को पूरा करने के लिए एक सामंजस्य को प्रभावित किये बिना विविधताओं को कायम रखा जाता है। जिसमें अनेकों में एक, विविधता में एकता और विशिष्टताओं के बीच सार्वभौमिक रूप को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। अनेकेश्वरवाद अपनी सभी कमजोरियों और विफलताओं के साथ, निश्चित रूप से धार्मिक विचारों के विकास की प्रारंभिक व अपरिपक्व अवस्था है। वैदिक युग के बाद के समय में, हम केवल एक दिव्य सत्ता होने की ओर झुकाव पाते हैं; ईश्वरों के बीच एक–दूसरे से सर्वोच्चता हासिल करने के लिए उन्मत्त प्रतिस्पर्धा धीरे–धीरे एक ईश्वर या सर्वोच्च सत्ता के विचार के रूप में विकसित हुई, जो बाद में धर्म के मुख्य विषय का गठन करती है।

6.4 एकैकाधिदेववाद (हेनोथिज्म), कैथेनोथिज्म (एकैकार्घ्याधिदेववाद), मोनोलैट्री (एक अर्घ्याधिदेववाद)

हेनोथिज्म ग्रीक शब्द 'हेनोस' (एक/एकल) और 'थियोस' (ईश्वर) से लिया गया है। अन्य ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए हेनोथिस्ट केवल एक ईश्वर की पूजा करते हैं। अन्य ईश्वरों की पूजा अन्य लोगों या समहों द्वारा की जा सकती है। हेनोथिस्ट यह भी मानते हैं कि जिस ईश्वर की वे पूजा करते हैं, वह अन्य ईश्वरों की योग्यता को रद्द या अस्वीकार किए बिना मौजूदा ईश्वरों में सर्वोच्च है। यह 'एक' ईश्वर में विश्वास है जो एकेश्वरवाद या 'केवल एक' ईश्वर में विश्वास से अलग है। मैक्समूलर ने इसे अनेकेश्वरवादी से एकेश्वरवादी विश्वास की ओर बढ़ने के एक निश्चित चरण के रूप में प्रस्तुत किया। मूलर ने कहा कि हेनोथिज्म "सैद्धान्तिक रूप में एकेश्वरवाद और वास्तविक रूप में अनेकेश्वरवाद'' है। वह इसे धर्म के इतिहास में सबसे प्रारंभिक चरण के रूप में रखते हैं। मूलर कहते हैं, ''ईश्वर का ये प्राथमिक अतंर्ज्ञान अपने आप में न तो एकेश्वरवादी था और न ही अनेकेश्वरवादी।'' किसी भी भाषा में एकवचन से पहले बहुवचन मौजदू नहीं है। ईश्वर का प्राथमिक अतंर्ज्ञान और ईश्वर पर निर्भरता की आंतरिक भावना को एकेश्वरवादी नहीं कहा जा सकता है। एक ईश्वर पर विश्वास में एक अलग विशेष निषेध शामिल है और यह केवल वास्तविक या काल्पनिक अनेक ईश्वरों

की धारणा के उपरांत ही संभव है। वह कहते है कि यह विश्वास 'ईश्वर है' के रूप में तैयार किया जा सकता है, लेकिन अभी तक 'ईश्वर है पर एक है' के रूप में नहीं है।

हेनोथिज्म की इस विचारधारा को वैदिक काल में विभिन्न हिंदू ईश्वरों की अवधारणा में देखा जा सकता है। यह दृष्टिकोण पूर्व–पैगंबर युग के पहले मोज़ेक यहूदी धर्म की यहोवा की पूजा के समान है। पश्चिमी धर्म दर्शन में हेनोथिज़्म से सम्बन्धित दो विचार मोनोलैट्रिस्म और कैथेनोथिज्म मिलते हैं, जिन्हें आमतौर पर हेनोथिजम के उप–प्रकार के रूप में समझा जाता है।

कैथेनोथिज्म हेनोथिज्म का ही एक विस्तार है। यह "केथ'' और "हेना'' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है ''एक–एक करके''। कैथेनोथिज्म यह विश्वास है कि एक से अधिक ईश्वर हैं, लेकिन किसी भी समय में केवल एक ईश्वर की ही पूजा की जानी चाहिए। अन्य ईश्वर किसी दूसरे समय या स्थान पर पूजा के योग्य हो सकता है। इस प्रकार प्रत्येक ईश्वर अपने समय और स्थान में सर्वोच्च है। अनेकेश्वरवादी धर्मों में अक्सर कैथेनोथिज्म पाया जाता है जिसमें प्राकृतिक शक्तियों की पूजा की जाती है। वर्षा की आवश्यकता होने पर वर्षा के ईश्वर की पूजा की जाती है। फसल के समय सूर्य ईश्वर की पूजा की जाती है, विवाह में प्रजनन क्षमता के ईश्वर का आह्वान किया जाता है और शिक्षा की देवी (उदाहरण के लिए हिंदू धर्म में सरस्वती) का ध्यान तब किया जाता है जब विद्यार्थी परीक्षा और इसी तरह के अन्य अवसरों पर जाते हैं।

मोनोलैट्री हेनोथिज्म का अधिक विशिष्ट रूप है। मोनोलैट्री इस विश्वास को बताता है कि एक से अधिक देवता हो सकते हैं, लेकिन केवल एक ही पूजा के योग्य है। अपनी मान्यता में कोई बदलाव किये बिना व्यक्ति उस देवता की लगातार पूजा करता है। मोनोलैट्रिज्म कभी–कभी लोगों को, उन ईश्वरों को त्याग कराता है जिनका वे सम्मान नहीं करते हैं। धार्मिक कट्टरवाद मोनोलैट्रीज्म का एक रूप है जिसमें किसी विशेष ईश्वर का भक्त अपने धर्म या ईश्वर को साथी मनुष्यों पर ''निरपेक्ष'' के रूप में थोपने की कोशिश करता है। हेनोथिज्म की तुलना में मोनोलैट्री अधिक विशिष्ट है क्योंकि एक मोनोलेटर केवल एक ईश्वर की पूजा करता है, जबकि हेनोथिस्ट परिस्थितियों के आधार पर देव समुदाय के भीतर किसी भी ईश्वर की पूजा कर सकता है। कुछ विश्वास प्रणालियों में, एक हेनोथिस्टिक ढांचे के भीतर सर्वोच्च ईश्वर का चयन सांस्कृतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक या राजनीतिक कारणों के आधार पर किया जा सकता है। जबकि वेद, सबसे प्रारंभिक हिंदू ग्रंथ, अधिकांश भाग के लिए हेनोथिस्टिक हैं, एक सर्वोच्च तत्व या आत्मा की धारणा उपनिषदों में अधिक प्रमुख हो जाती है। हेनोथिज्म अनेकेश्वरवाद से एकेश्वरवाद की ओर एक कदम है।

6.5 द्वैतवाद (डायथिज्म)

द्वैतवाद दो विरोधी या पूरक सिद्धान्तों को ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाले सर्वोच्च सत् के रूप में मानता है। दो विरोधी शक्तियों के रूप में परिभाषित द्वैतवाद शुभ बनाम अशुभ जैसे द्वैतवाद के पश्चिमी विचार से संबंधित है। अन्य द्वैतवादी दो समान रूप से शक्तिशाली बलों को एक साथ काम करते हुए देखते हैं, यिन और यांग की तरह। एक धार्मिक सिद्धान्त के रूप में, द्वैतवाद पहले के अनेकेश्वरवादी विचारों से श्रेष्ठ साबित हुआ, क्योंकि इसने अशुभ की समस्या पर अपना ध्यान केंद्रित किया और एक समाधान खोजने की कोशिश की।

द्वैतवादी विचारों के संकेत नोस्टिक्स (Gnostics) की शिक्षाओं में मिलते हैं, जो दो विपरीत, आध्यात्मिक और स्वयंभू अस्तित्वमान सिद्धान्तों में विश्वास करते थे; पारसी धर्म में भी दो प्रतिद्वंद्वी ईश्वरों, अहुरा मज़्दा और अहिरमन की चर्चा की गई है– एक अच्छाई का प्रतीक है और दूसरा बुराई का प्रतीक है। ईश्वर और 'शैतान' की ईसाई अवधारणा में और प्लेटोनिक अवधारणाओं के साथ–साथ नव–प्लेटोनवाद में दो विरोधी सिद्धान्त – शुभ और अशुभ के देखे जाते हैं।

आस्तिकों द्वारा, अशुभ के तथ्यात्मक अस्तित्व के परिपेक्ष्य में, ईश्वर की दयालुता उसकी सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञता का त्याग करके संरक्षित की जाती है, जिससे वह एक सीमित ईश्वर की नींव रखते हैं चाहे वह कितनी ही सूक्ष्म हो। इसी तरह के विचार जॉन एस मिल द्वारा उत्तरोत्तर समय में निर्धारित किए गए थे। मिल बताते हैं कि ''प्रकृति की संरचना का हर प्रमाण कुछ सीमाओं के अंतर्गत काम करने वाले रचनाकार की रचना का एक उदाहरण है। इसलिए 'प्राकृतिक धर्मशास्त्र' का प्रमाण स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि ब्रह्माण्ड के रचियता ने सीमाओं के अंतर्गत काम किया है।'' द्वैतवाद के सिद्धान्त अशुभ की समस्या का व्यावहारिक समाधान नहीं देते हैं। यहां तक कि दो स्वतंत्र पदार्थों के रूप में द्वैतवाद को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। डॉ. एच. स्टीफन बताते हैं, ''यदि द्वैतवाद के अनुसार दो बिल्कुल स्वतंत्र पदार्थ हैं, तो यह समझना असंभव है कि वे एक–दूसरे के साथ पारस्परिक प्रभाव में कैसे आ सकते हैं, ताकि एक दूसरे पर कार्य कर सके – भौतिक द्रव्य पर ईश्वर और ईश्वर पर भौतिक द्रव्य।'' धार्मिक विचारों का प्रवाह, इसलिए, एक अलग मोड़ लेता हैः एकेश्वरवाद की ओर एक मोड़। लोट्ज़ का मानना है कि एक सिद्धान्त के रूप में, द्वैतवाद अकल्पनीय है, क्योंकि यह हमेशा दो वास्तविकताओं के बीच संघर्ष को हल करने के लिए एक तीसरे या उच्च सिद्धान्त को मानता है और वह तीसरा सिद्धान्त धार्मिक जीवन का सर्वोच्च सिद्धान्त माना जाता है। एकेश्वरवाद का ईश्वर ब्रह्माण्ड के एकमात्र व्याख्यात्मक कारण के रूप में एक सर्वव्यापी, एक सर्वोच्च व्यक्ति के रूप में प्रकट होता है, ताकि विविधता में सामंजस्य प्राप्त किया जा सके – एक ऐसा कारक जो अब तक द्वैतवाद में अनुपस्थित था।

6.6 एकेश्वरवाद (मोनोथिज्म)

एकेश्वरवाद एक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास है। मोनोथिज्म शब्द ग्रीक शब्द 'मोनोस' जिसका अर्थ है 'एक' और 'थियोस' जिसका अर्थ है 'ईश्वर' से आया है। क्योंकि एकेश्वरवाद की स्थापना इस विचार पर आधारित है कि केवल एक ही ईश्वर है, एकेश्वरवादी यह भी मानते हैं कि यह ईश्वरसर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी है, सृष्टिकर्ता है और बिना किसी अन्य पर निर्भरता के पूरी तरह से आत्मनिर्भर है। सबसे बड़े एकेश्वरवादी धर्म हैं ईसाई धर्म, इस्लाम और सिख धर्म। एकेश्वरवाद आमतौर पर अनेकेश्वरवाद, जो कई देवताओं में विश्वास संबंधी सिद्धान्त है, और अनीश्वरवाद जिसमे ईश्वर के अस्तित्व को अस्विकारा गया है, के विपरीत है।

सिगमंड फ्रायड ने तर्क दिया है कि एकेश्वरवाद की उत्पत्ति मिस्र में हो सकती है। अपने लेख ''द ओरिजिन ऑफ रिलिजन'' में, फ्रायड कहते हैं, राजा अखेनाटन ने 1375 ईसा पूर्व में सूर्य देवता एटेन की पूजा को फिर से शुरू किया। अखेनाटन ने एटेन के धर्म को एकमात्र धर्म बनाया और एटेन को एकेश्वरवादी ईश्वर के रूप में पेश किया। उन्होंने शाही फरमान द्वारा किसी भी अन्य प्रकार के धर्म और अन्य देवताओं की पूजा पर भी रोक लगा दी। फ्रायड का सुझाव है कि यहूदी धर्म के संस्थापक मूसा अखेनाटन के एकेश्वरवाद से प्रभावित हुए होंगे जब उन्होंने यहूदियों के लिए एक ईश्वर की अवधारणा को तराशा था। इस्लाम में भी हम इस विचार को देखते हैं कि ईश्वर एक है और उसकी दिव्य महिमा को साझा करने के लिए उसका कोई साथी नहीं है। 'ट्रिनिटी', त्रिरूप की अवधारणा के कारण ईसाई धर्म यहूदी और इस्लाम के पारंपरिक एकेश्वरवाद से थोड़ा दूर जाता है, जिसमें ईसाई तीन व्यक्तित्वों में एक ईश्वर को देखते हैं।

दो प्रकार के एकेश्वरवाद के बीच अंतर किया जा सकता है:

1) **विस्तृत एकेश्वरवाद (Inclusive Monotheism)** – यह विश्वास कि केवल एक ईश्वर है, और अन्य सभी दावाकृत ईश्वर सिर्फ अलग–अलग नाम हैं, केवल उनके एक सर्वोच्च ईश्वर के अलग–अलग पहलू या अवतार हैं, और

2) **विशिष्ट एकेश्वरवाद (Exclusive Monotheism)** – जो इस विश्वास को संदर्भित करता है कि केवल एक ईश्वर है, और अन्य सभी दावा किए गए ईश्वर या तो असत्य हैं और इससे अलग हैं, या वे मानव परिकल्पना, अशुभ, या मानवीय त्रुटि का परिणाम है ; वे किसी भी अन्य धार्मिक विश्वासों के इश्वरों के अस्तित्व का खण्डन करते हैं।

हिंदू संप्रदाय 'स्मार्त' विस्तृत एकेश्वरवाद का एक उदाहरण है। अधिकांश अब्राहमिक धर्म विशिष्ट एकेश्वरवाद के उदाहरण हैं। अधिकांश एकेश्वरवादी प्रणालियाँ प्रकृति में विशिष्ट होती हैं। इस विशिष्टता के कारण, एकेश्वरवादी धर्मों ने ऐतिहासिक रूप से अनेकेश्वरवादी धर्मों की तुलना में कम धार्मिक सहिष्णुता प्रदर्शित की है। देववाद, सर्वेश्वरवाद और

सर्वातिसर्वेश्वरवाद को एकेश्वरवाद के तीन रूप माना जाता है। हम निम्नलिखित अनुभागों में उनकी विस्तार से चर्चा करेंगे।

6.7 देववाद (डीज्म)

अंग्रेजी शब्द डीज्म और थीज्म लैटिन शब्द 'ड्यसू' और ग्रीक 'थियोस' से व्युत्पन्न हैं। दोनों का अर्थ ''ईश्वर'' है। अंग्रेजी में ''डीस्ट'' और ''थीस्ट'' शब्द मूल रूप से पर्यायवाची थे, लेकिन 17 वीं शताब्दी तक शब्द अर्थ में भिन्न होने लगे। देववाद की एकेश्वरवाद के ही एक प्रकार के रूप मे चर्चा की जाती है। सामान्य एकेश्वरवाद को अपनाने के अलावा देववादी (डीस्ट) इस विश्वास को भी अपनाते हैं कि एकमात्र अस्तित्वमान ईश्वर स्वभाव से व्यक्तित्वपूर्ण है और सृजित ब्रह्माण्ड से परे है। वे इस विश्वास को अस्वीकार करते हैं कि यह ईश्वर इस जगत में अंतर्निहित है, जिसका अर्थ है कि वर्तमान में निर्मित ब्रह्माण्ड में सक्रिय है। देववाद के सत् सम्बन्धी दृष्टिकोण के अनुसार, ईश्वर ने ब्रह्माण्ड की रचना की लेकिन फिर स्वयं को अपनी रचना से अलग कर लिया। कभी–कभी इसे ''घड़ीसाज'' ईश्वर के रूप में संदर्भित किया जाता है– एक ईश्वर जिसने ब्रह्माण्ड रूपी मशीन बनाई है और इसे चालू करने के बाद, इसे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ देखता है। इस दृष्टिकोण की

सबसे प्रसिद्ध अभिव्यक्ति अरस्तू की ''प्राइम मूवर'' (आद्य चालक) की अवधारणा में देखी जा सकती है। लाइबनिज ने ''पूर्व –स्थापित सामंजस्य'' के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। 18वीं शताब्दी में विशेष रूप से फ्रांस और इंग्लैंड में तर्कवादी दृष्टिकोण ईश्वर की देववादी अवधारणा पर जोर देता है।

देववाद अलौकिक घटनाओं जैसे भविष्यवाणियों, चमत्कारों और संगठित धर्म में प्रमुख दिव्य रहस्योद्घाटन को नकारता है। इसके बजाय, देववाद का मानना है कि धार्मिक विश्वासों को मानवीय तर्कवाद और प्राकृतिक जगत की दृश्यमान विशषताओं पर आधारित किया जाना चाहिए और ये स्रोत सृष्टिकर्ता के रूप में किसी सर्वोच्च सत्ता के अस्तित्व को प्रकट करते हैं। ब्रह्माण्ड को तर्कसंगत और व्यवस्थित माना जाता है क्योंकि ईश्वर इसे इसी तरह चाहते थे; ईश्वर, बदले में, तर्कसंगत इच्छाओं, तर्कसंगत लक्ष्यों और तर्कसंगत तरीकों के साथ एक तर्कसंगत सत्ता है जो मानवीय तर्क से बोधगम्य है। देववादी धार्मिक रूढ़िवादिता, हठधर्मिता और सिद्धान्तवाद के विरोधी थे और हैं, जिनके बारे में उन्होंने यह तर्क दिया है कि ये सभी अनिवार्य रूप से भ्रष्टाचार और असहिष्णुता की ओर ले जाते हैं। देववादी पूजा के बहुत पवित्र और अत्यधिक भावनात्मक रूपों को भी अस्वीकार करते हैं। देववाद में, धर्म अत्यधिक भावनात्मक धार्मिक विश्वास की अपेक्षा तर्क और तर्कसंगतता का विषय है।

सोरेन कीर्केगार्ड जैसे दार्शनिकों ने ''देववादी आलौकिकता'' के रूप में लेबल किए गए देवतावाद के एक बहुत ही अलग रूप का समर्थन किया। इस दृष्टिकोण के अनुसार, ईश्वर न केवल प्रकृति से पारलौकिक और बाहरी हैं, बल्कि ''सर्वोच्च मानव और मूल्यों का आलौकिक प्रकटकर्ता'' भी हैं। इस बात को अस्वीकार करते हुए कि ईश्वर की प्रकृति को मानव अनुभव के माध्यम से जाना जा सकता है, देववादी आलौकिकतावादीयों का तर्क है कि ईश्वर को उसी के द्वारा प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन के माध्यम से समझा जा सकता है। इस प्रकार ईश्वर के साथ ऐक्य प्रार्थना या ध्यान जैसी गतिविधियों के माध्यम से स्थापित किया जा सकता है।

हालाँकि एक समय में देववाद इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी और यहाँ तक कि अमेरिका के बुद्धिजीवियों के बीच एक प्रधान दृष्टिकोण बन गया था, बाद में इसने अपना प्रभाव खो दिया। एक तरफ, जिन लोगों का झुकाव पारंपरिक देवताओं में विश्वास को अस्वीकार करने की ओर है, वे अनीश्वरवादी बन सकते हैं और ईश्वर में विश्वास को पूरी तरह से अस्वीकार कर सकते हैं। दूसरी तरफ, यह ब्रह्माण्ड को एक घड़ी की तरह बारीकी से समायोजित की गई मशीन के रूप में मानता है। लेकिन ब्रह्माण्ड की वह तस्वीर इतनी आम नहीं है; इसके बजाय, ब्रह्माण्ड को निरंतर विकासशील, कोलाहलपूर्ण और अधिक सक्रिय के रूप में ज्यादा देखा जाता है।

एक ओर बात जो देववाद दृष्टिकोण को असंगत बनाती है, वह यह है कि इसमें रचनाकार और रचना के बीच सम्बन्ध स्थापित नहीं होता है। यद्यपि ईश्वर एक निश्चित समय पर दुनिया की रचना करता है, वह सीमित प्राणियों के साथ कोई घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं रखता है और दूर रहता है। जहाँ तक इस सिद्धान्त में सृष्टि की समस्या का सम्बन्ध है, एक प्रश्न तर्कसंगत रूप से उठ सकता है कि उसने ब्रह्माण्ड को बनाने की आवश्यकता क्यों महससू की, यदि अंततः उसे इससे पृथक होना था।

यह सिद्धान्त एक और प्रश्न की ओर भी ले जाता है– क्या वह पहले से उपलब्ध सामग्रियों से जगत की रचना करता है, जो उसकी अपनी सत्ता से पृथक है? इस प्रश्न का हां में उत्तर देने मे आध्यात्मिक (आत्मा) और भौतिक द्रव्य का द्वैतवाद शामिल है, जबकि ना में उत्तर यह स्थापित करता है कि ईश्वर ने अपने में से ही ब्रह्माण्ड का निर्माण किया। बिना इस बात का उत्तर दिए की रचना उपरांत उसकी अपनी ही कृति से पृथक होने की संभाव्यता या कारण क्या है ।

यदि ईश्वर उस दुनिया के प्रति उदासीन है जिसे उसने बनाया है और उसके अपने सार्वभौमिक नियमों के अनुसार स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए अकेला छोड़ देता है– परिणामस्वरूप, असीम सत्ता की छवि इतनी अपरिष्कृत और मानवरूपी हो जाती है जो व्यक्तिगत ईश्वर संबंधी एक आस्तिक मन की लालसा के अनुरुप नहीं होती। चूंकि धर्म का उद्देश्य सीमित और अनंत के बीच सामंजस्य और सौहार्द स्थापित करना है, गैलोवे ने देववाद

के सिद्धान्तों पर टिप्पणी की और इसे ''मनोवैज्ञानिक रूप से गलत और आध्यात्मिक रूप से अपर्याप्त'' कहा।

एकेश्वरवाद धीरे–धीरे एकत्ववाद की ओर ले जाता है। देववाद के दूसरे चरम पर, हम सर्वेश्वरवाद के सिद्धान्त को पाते हैं जो ईश्वर के विचार को दुनिया के अंतर्भूत सिद्धान्त के रूप में देता है। सर्वेश्वरवादी दृष्टिकोण प्रकृति और ईश्वर में तादात्म्य स्थापित करता है।

6.8 एकतत्त्ववाद या एकत्ववाद (मोनिज्म)

एकत्ववाद एकता की उच्चतर अवधारणा है। एकेश्वरवादी अवधारणा, अपने विशुद्ध रूप में द्वैतवाद को शामिल करने के लिए बाध्य है। एकेश्वरवाद का उद्देश्य केवल ईश्वरत्व की एकता है– कई इश्वरों का एक में परिवर्तन जो इस जग से परे और पृथक है जिसकी रचना उसने स्वयं की और जिसका वह मार्गदर्शन करता है। एकेश्वरवाद प्रकृति को ईश्वर के विरुद्ध मानता है और इसलिए यह एक विशिष्ट अर्थ में ही एकता की लालसा को संतुष्ट कर सकता है। लेकिन एकत्ववाद समग्र अस्तित्व को एक ही स्रोत में खोजता है। सर्वेश्वरवादी दृष्टिकोण प्रकृति और ईश्वर को एक रूप मानता है। एकेश्वरवाद एकत्ववाद की ओर ले जाता है। एक सत् की परिकल्पना की जाती है, जो विविध रूपों में प्रकट होती है। बाद में उपनिषदों में 'उस एक' की पहचान आत्मन या ब्रह्मण के साथ की गई।

6.9 सर्वेश्वरवाद (पेनथिज्म)

पेनथिज्म शब्द ग्रीक मूल 'पैन' से लिया गया है जिसका अर्थ है 'सब' और 'थियोस' जिसका अर्थ है 'ईश्वर'। इस प्रकार, पेनथिज्म या तो यह विश्वास है कि ब्रह्माण्ड ईश्वर है और पूजा के योग्य है या फिर यह कि ईश्वर जो भी यहां विद्यमान है उन सभी का संयोजन है और संयुक्त द्रव्य, बल, प्राकृतिक नियम जो हम अपने चारों ओर देखते हैं, वे ईश्वर की अभिव्यक्तियाँ हैं। सर्वेश्वरवादी सिद्धान्त का केंद्रीय बिंदु ईश्वर और प्रकृति के बीच के अंतर को अस्वीकार करना है। जो एकेश्वरवाद का अपरिहार्य निष्कर्ष है। सर्वेश्वरवाद यह विश्वास है कि भौतिक ब्रह्माण्ड ईश्वर के बराबर है, और यह कि एक निर्माता और उसके निर्मित पदार्थ के बीच कोई विभाजन नहीं है। यहां ईश्वर की कल्पना प्रकृति से परे के रूप में नहीं बल्कि उसमें अंतर्निहित के रूप में की गई है। संसार ईश्वर से प्रवृत नहीं होता, बल्कि स्वयं ईश्वर है। पश्चिमी दर्शन में, हम इसकी उत्पत्ति पारमेनाइड्स और ज़ेनोफेन्स के शिक्षण के साथ–साथ स्पिनोज़ा के दर्शन में पाते हैं। जबकि पूर्वी दर्शन में यह शंकर के दर्शन में पाया जाता है।

स्पिनोज़ा के अनुसार, ईश्वर द्रव्य है और द्रव्य ईश्वर है। यह द्रव्य एक पूर्ण आध्यात्मिक सत् है। स्पिनोज़ा की तरह, हेगेलियन आदर्शवाद सर्वेश्वरवादी है। हेगेल सत् को सर्वोच्च चेतना या

इच्छा मानते हैं। ईश्वर अनंत और सर्वव्यापी है। यह सिद्धान्त औपनिषदिक कहावत से संबंधित है ''अहं ब्रह्मास्मि'' (मैं ब्रह्म हूं) – *बृहदारण्यक उपनिषद्*, 2.5,19 और ''सर्वं खलु इदं ब्रह्म'' (यह सब वास्तव में ब्रह्म है) बृ.उ.1.4.10.

सर्वेश्वरवाद के सिद्धान्त में मानवीय मूल्य जैसे स्वतंत्रता, सत्य, सौंदर्य, शुभ और सभी नैतिक उपलब्धियाँ जैसे अंधकार में खो गए थे। इस प्रकार सभी धार्मिक उद्देश्यों की जड़ छिन्न–भिन्न हो गई। सर्वेश्वरवाद एक सर्वोच्च के रास्ते पर आगे बढ़ा, जो सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, धर्म का देवता नहीं है। सर्वेश्वरवाद कारण और कार्य के बीच के अंतर को अनदेखा करता है। सर्वेश्वरवादी दृष्टिकोण के विरुद्ध कुछ प्रश्न उठते हैं: यदि ईश्वर अन्तर्निहित है या यदि वह इस संसार के भीतर है तो ईश्वर वास्तविक, शाश्वत और अनंत कैसे हो सकता है? अगर हम मानते हैं कि सभी ईश्वर है और ईश्वर सब कुछ है, तो दुनिया में अशुभ की समस्या की व्याख्या कैसे करें?

देववाद में ईश्वर अपनी रचना से पूरी तरह से अलग हो गया है और सर्वेश्वरवाद में, इतिहास, प्रगति और विकास की अवधारणा का खण्डन कर हर व्यष्टि से परे सब कुछ एक 'भवन समूह ब्रह्माण्ड' मे पूरी तरह से विलय हो गया। जबकि देववाद ईश्वर के पारलौकिक स्वभाव पर जोर देता है और सर्वेश्वरवाद उसकी अंतर्निहितता को स्वीकार करता है। पैनेंथिज्म (सर्वातिसर्वेश्वरवाद) दो केंद्रीय विचारों के बीच एक मध्य मार्ग है। यह ईश्वर को न तो इस लोक से परे और न ही अंतर्निहित, बल्कि पारलौकिक और आसन्न दोनों के रूप में समझाता है।

6.10 सर्वातिसर्वेश्वरवाद (पेनेंथिज्म)

पेनेंथिज्म शब्द का अर्थ है ''सब–ईश्वर–में'' (पेनै–एन–थियोस)। सर्वातिसर्वेश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद की तरह ही यह विश्वास है कि भौतिक ब्रह्माण्ड एक ईश्वर से जुड़ा हुआ है। हालाँकि, इसमें भी माना जाता है कि ईश्वर भौतिक ब्रह्माण्ड से बड़ा है। इस विश्वास प्रणाली के अनुसार ईश्वर प्रकृति के हर हिस्से में प्रवेशित है, लेकिन साथ ही प्रकृति से पूरी तरह अलग है। तो यह ईश्वर प्रकृति का हिस्सा है, लेकिन फिर भी एक स्वतंत्र पहचान बनाए रखता है। सर्वातिसर्वेश्वरवादी यह भी मानते हैं कि ईश्वर चैतन्यशील है, जिससे उसने ब्रह्माण्ड को बनाया है, और व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक कृति का संरक्षण करता है। दूसरी ओर सर्वेश्वरवादी मानते हैं कि ब्रह्माण्ड स्वयं दिव्य है और व्यक्तित्वपूर्ण या निर्माता ईश्वर में विश्वास नहीं करता है।

हार्टशोर्न के अनुसार, पेनेंथिज्म को एक उपमा के माध्यम से समझा जा सकता है: जिस तरह एक जीव अर्ध–स्वायत्त पृथक कोशिकाओं के संग्रह के रूप में और एक स्वायत्त व्यक्ति के रूप

में मौजदू है, जो केवल कोशिकाओं के संग्रह से अधिक है, ईश्वर को दोनों के रूप में देखा जा सकता है– वास्तविकता के सभी घटकों के संग्रह के रूप में और ब्रह्माण्ड की तुलना में ''कुछ अधिक'' के रूप में। यद्यपि हमें, शेष सभी अस्तित्वमान पदार्थों के साथ, ईश्वर के ''शरीर'' के अंश के रूप में सोचा जा सकता है, ईश्वर का मन या चेतना उस शरीर से परे फैली हुई है और ईश्वर को केवल भागों के संग्रह से अधिक होने का कारण बनती है। ईश्वर के अंश के रूप में, हमारी स्वतंत्रता पूर्ण नहीं है– जैसे हमारे शरीर में कोशिकाओं की स्वतंत्रता पूर्ण नहीं है। इसके साथ ही, हमारे कार्य और विचार ईश्वर पर निर्भर या उसके द्वारा उतने ही नियंत्रित होते हैं, जितना कि हम अपने व्यक्तिगत कोशिकाओं के कार्यों को सचेत रूप से नियंत्रित और निर्देशित करने में सक्षम होते हैं, उससे अधिक नहीं। हम कोशिका मात्र से अधिक हैं, लेकिन हम अपनी कोशिकाओं पर निर्भर करते हैं कि वह हमारे मस्तिष्क से स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं ताकि हम विकसित हो सकें और यहां तक कि सबसे पहले अपने अस्तित्व के लिए भी हम उन पर निर्भर करते हैं।

इसलिए, सर्वातिसर्वेश्वरवादी ईश्वर मानवीय धार्मिक आकांक्षाओं और धर्मनिष्ठा की व्यावहारिक मांगों को पूरा करने में सक्षम है; उन्हें (ईश्वर) मानवीय मूल्यों और आदर्शों का स्रोत माना जाता है। प्रकृति, जीवन और मन को स्वतंत्र संस्थाओं के रूप में नहीं माना जाता है, बल्कि उन्हें सर्वोच्च आत्मा की अभिव्यक्ति माना जाता है।

सर्वातिसर्वेश्वरवाद मानता है कि 'सब कुछ' ईश्वर में है। अगर सभी चीजें ईश्वर में हैं तो ईश्वर सभी चीजों से ज्यादा नहीं हो सकते। चीजों के साथ ईश्वर की वही स्थिति होगी। यह द्वैतवाद की भावना पैदा करके धार्मिक कठिनाइयाँ भी पैदा करता है। सर्वातिसर्वेश्वरवाद में 'सभी चीजें ईश्वर में हैं', 'सभी चीजों' और 'ईश्वर' के द्वैतवाद को इंगित करता है। ईश्वर लौकिक और पारलौकिक दोनों है। प्रश्न यह उठता है कि यदि ईश्वर जगत में अवस्थित है तो ईश्वर पारलौकिक कैसे हो सकता है? दोनों दावों को एक साथ करना तार्किक रूप से असंगत है।

6.11 ऑटोथिज्म – आत्मदेववाद

आत्मदेववाद यह दृष्टिकोण है कि ईश्वरत्व स्वाभाविक रूप से श्स्वयंश के भीतर है और उसमें ईश्वरत्व प्राप्त करने की क्षमता है। आत्मदेववाद व्यक्तिवाद के संदर्भ में इस विश्वास का भी उल्लेख कर सकता है कि, स्वयं की आत्मा ईश्वरीय है।

6.12 अनीश्वरवाद (एथिज्म)

अनीश्वरवाद का अर्थ है कि या तो कोई ईश्वर नहीं है, या यदि है तो वह किसी भी तरह से मानव अस्तित्व को प्रभावित नहीं कर सकता है। इस अवधारणा का समर्थन करने के लिए प्रमाण प्रस्तुत किये जाते हैं, जिसमें हमारी तर्कसंगत समझ, ज्ञान, वैज्ञानिक उन्नति और भौतिकवादी विचार शामिल हैं। अनीश्वरवाद में ईश्वर से संबंधित प्रश्नों का उत्तर वैज्ञानिक ज्ञान से दिया जाता है। अनीश्वरवाद का दावा है कि मानव इतिहास में धार्मिक मान्यताओं का ईश्वर के अस्तित्व से कोई लेना–देना नहीं है। भौतिकवादी दार्शनिकों के अनुसार, ईश्वर और संसार के संदर्भ में हमारे ज्ञान और अनुभव में भौतिक वस्तुओ के अलावा और कुछ नहीं है। ईश्वरवादी दार्शनिकों द्वारा अब तक ईश्वर के स्वभाव का कोई सुसंगत या संतोषजनक सिद्धान्त नहीं समझाया गया है। ईश्वरवादियों के अशुभ की समस्या, एक अद्वितीय ईश्वर की स्वीकृति, रचना और रचनाकार के समस्या से संबंधित उत्तर विरोधाभास से मुक्त नहीं हैं।

ईश्वर के निं–अस्तित्व के सिद्धान्त के रूप में अनीश्वरवाद को एक संतोषजनक सिद्धान्त के रूप में नहीं पाया जाता है। इसके कुछ कारण नीचे दिए गए हैं:

सर्वप्रथम, हालांकि ईश्वर के अस्तित्व को पूरी तरह से नकारा गया है, पर इसे पूरी तरह से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। क्योंकि दुनिया को समझाने के लिए हमें यह मान लेना होगा कि ब्रह्माण्ड का एक निर्माता, पालनकर्ता, नियंत्रक होना चाहिए।

दूसरे, यद्यपि वैज्ञानिक विकास हुआ है, फिर भी वैज्ञानिक उन्नति मनुष्य के हृदय से परमात्मा के रूप में ईश्वर की छाया को नहीं मिटा सकती।

ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में विभिन्न विचारकों और दार्शनिकों ने अपने विचार दिए हैं। लेकिन जहां तक वे आस्तिकों के धार्मिक अनुभव की उपेक्षा करते हैं, उनके तर्क अधुरे हैं और केवल तर्क के लिए हैं।

6.13 अज्ञेयवाद (एगनोथिज्म)

अज्ञेयवाद शब्द टी. एच. हक्सले द्वारा गढ़ा गया है, जो किसी विश्वास को निलम्बित किये जाने की स्थिति को व्यक्त करता है। अज्ञेयवाद का शाब्दिक अर्थ है ''अज्ञानवाद''। यह मुख्य रूप से ईश्वर के सम्बन्ध में विश्वास पर लागू होता है। यह हमें ईश्वर के अस्तित्व की पुष्टि या खंडन करने के पर्याप्त कारण के बारे में जानकारी नहीं देता है। अज्ञेयवादी मानते हैं कि ईश्वर या देवताओं का अस्तित्व अज्ञात या स्वाभाविक रूप से जाना नहीं जा सकता। अज्ञेयवादी सिद्धान्त के प्रस्तावक हक्सले, स्पेंसर, डेविड ह्यूम और वोल्टेयर थे। सभी अज्ञेयवादी दार्शनिक ईश्वर को पदार्थ या वस्तुओ के रूप में मानने का प्रयास करते हैं जो स्थान और काल के भीतर हैं। हक्सले ने कहा, ईश्वर के अस्तित्व को भले ही नकारा नहीं जा सकता, लेकिन हम उसके वास्तविक स्वरूप को नहीं जान सकते। ह्यमू एक अज्ञेयवादी और

संशयवादी दार्शनिक हैं। उसे ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह था। लेकिन ह्यमू वास्तविकता की समस्याओं को हल करने के लिए एक संतोषजनक राय देने में विफल रहता है। वह ज्ञानमीमांसीय और तत्वमीमांसीय विचारों के बीच एक सुसंगत स्तर बनाये नहीं रख पाता।

बोध प्रश्न I

ध्यातव्यः क) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग करें ।

ख) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें ।

1. ईश्वर के अस्तित्व में अविश्वास या संदेह सम्बंधी विभिन्न अवधारणाओं की व्याख्या करें ।

.....

.....

.....

.....

2. एकैकाधिदेववाद (हेनोथिज्म) क्या है?

.....

.....

.....

.....

3. देववाद (डीज्म) क्या है?

.....

.....

.....

.....

4. एकेश्वरवाद (मोनोथिज्म) क्या है और यह एकत्ववाद (मोनिज्म) से कैसे अलग है?

.....

.....

.....

.....

5. सर्वेश्वरवाद (पेंथीज्म) और सर्वातिसर्वेश्वरवाद (पेनन्थिज्म) में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

6.14 सारांश

यह इकाई ईश्वर की विभिन्न अवधारणाओं का वर्णनात्मक चित्र प्रस्तुत करती है। कुछ धर्मशास्त्रियों ने धार्मिक परिघटनाओं के अपने अध्ययन में दिखाया है कि मनुष्यों में ''ईश्वरीय चेतना'' भय का अनुभव करने से पहले आई थी। ईश्वरवाद ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास है। अनेकश्वरवाद का अर्थ है कई इश्वरों में विश्वास। एकेश्वरवाद एक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास है। समयानुसार विभिन्न धर्मशास्त्रियों और दार्शनिकों ने माना है कि एकेश्वरवाद अनेकश्वरवाद से ''विकसित'' हुआ, यह तर्क देते हुए कि अनेकश्वरवादी विश्वास अधिक आदिम थे और एकेश्वरवादी विश्वास अधिक उन्नत थे। हेनोथिज्म यह विश्वास है कि कई ईश्वर मौजूद हैं पर उन ईश्वरों में से सिर्फ एक की पूजा पर ध्यान केंद्रित किया जाता हैं। हेनोथिज्म बहुदेववाद से एकेश्वरवाद की ओर एक कदम है।

देववाद, सर्वेश्वरवाद और सर्वातिसर्वेश्वरवाद को एकेश्वरवाद के तीन रूप माना जाता है। एकेश्वरवाद धीरे–धीरे एकतत्त्ववाद की ओर ले जाता है। जबकि ईश्वरवाद ईश्वर की उत्कृष्ट प्रकृति पर जोर देता है और सर्वेश्वरवाद उसकी अन्तर्निहितता को स्वीकार करता है, सर्वातिसर्वेश्वरवाद दो केंद्रीय विचारों के बीच एक मध्य मार्ग चलाता है। यह ईश्वर को न तो पारलौकिक और न ही आसन्न, बल्कि पारलौकिक और आसन्न दोनों के रूप में समझाता है। कभी–कभी 'ईश्वरवाद' शब्द का प्रयोग 'सर्वातिसर्वेश्वरवाद' या 'ठोस एकेश्वरवाद' शब्द के समकक्ष रूप में किया जाता है।

अनीश्वरवाद इस विश्वास को संदर्भित करती है कि कोई ईश्वरत्व नहीं है और अज्ञेयवाद यह विश्वास है कि ईश्वर या ईश्वरों का अस्तित्व अज्ञात है और/या स्वाभाविक रूप से अनजाना है।

6.15 कुंजी शब्द

अंतर्निहित (Immanence) : अन्तर्निहितता का सिद्धान्त यह मानता है कि परमात्मा भौतिक जगत में प्रकट होता है। यह ईश्वरीय अस्तित्व का समर्थन सम्बंधी कुछ दार्शनिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तों का हिस्सा है। आमतौर पर एकेश्वरवादी, सर्वेश्वरवादी, सर्वातिसर्वेश्वरवादी विश्वासों में इससे यह दर्शाया जाता है कि आध्यात्मिक/ आत्मिक संसार इस भौतिक व्यवहारिक संसार में व्याप्त है।

पारलौकिक (Transcendence) : धर्म दर्शन की चर्चा में पारलौकिकता ईश्वर की प्रकृति और उसकी सत्ता का वह पहलू है जो भौतिक ब्रह्माण्ड से पूरी तरह स्वतंत्र और सभी ज्ञेय भौतिक नियमों से परे है।

6.16 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

- कोप्लेस्टन, फ्रेड्रिक एस. जे. *ए हिस्ट्री ऑफ फिलॉसफी.* न्यू यॉर्कः इमेज बुक्स, 1960.
- डैरेल ई. क्रिस्टेंसन. *इन्टरनेशनल जर्नल फॉर फिलॉसफी ऑफ रिलिजन*, वॉल्यूम 1, 1970.
- ड्यूरेंट, विल. *द स्टोरी ऑफ फिलॉसफी.* न्यू यॉर्कः पॉकेट बुक्स, 1976.
- एडवर्ड, पॉल (एडि.). *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी.* वो. 4. 1967; रिप्रिंट न्यू यॉर्कः मैकमिलन पब्लिशिंग कंपनी, इंक. 1972.
- ग्लेन, जे. पॉल. *द हिस्ट्री ऑफ फिलॉसफी.* लंदनः हेर्डर बुक्स, 1963.
- हैमलिन, आर. डब्ल्यू. *ए हिस्ट्री ऑफ वेस्टर्न फिलॉसफी.* इंग्लैंडः पेंगुइन बुक्स, 1988.
- मुंडियाथ, ऑगस्टी. ''थीजम'' इन *ए.सी.पी.आई. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी*, वॉल्यूम –1, एडि. जॉनसन पुथेनपुरक्कल एण्ड जॉर्ज पैन्थनमैकेल, बैंगलोरः एशियन ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन, 2010.
- स्कॉट, डायोन एण्ड अदर. *हिस्ट्री ऑफ फिलॉसफी.* न्यू यॉर्कः हार्पर कॉलिन्स, 1993.
- थिली, फ्रैंक. *ए हिस्ट्री ऑफ फिलॉसफी.* इलाहाबादः सेंट्रल बुक डिपो, 1981.
- वात्स्यायन, डॉ. *हिस्ट्री ऑफ वेस्टर्न फिलॉसफी.* मेरठः केदारनाथ रामनाथ, 1970.

6.17 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1. धर्म दर्शन में ऐसी कई अवधारणाओं देखने को मिलती हैं, जिनमें ईश्वर के अस्तित्व में अविश्वास या संदेह का उल्लेख करती हैं। वे हैं:

गैर–ईश्वरवाद (Nontheism): किसी भी देवता में स्पष्ट रूप से पहचाने गए विश्वास का अभाव। गैर–ईश्वरवादी धर्मों में ताओवाद और ज़ेन बौद्ध धर्म शामिल हैं।

ईश्वरवादी विचारधारा–विरोधी (Antitheism): ईश्वरवाद का सीधा विरोध, या फिर यह विचार कि ईश्वरवाद विनाशकारी है।

अनीश्वरवाद (Atheism): अनीश्वरवाद इस विश्वास को संदर्भित करती है कि कोई ईश्वर नहीं है। इसमें दृढ़ अनीश्वरवाद, यह विश्वास कि कोई ईश्वर नहीं है, और अदृढ़ अनीश्वरवाद, ईश्वरों के अस्तित्व में विश्वास की अनुपस्थिति दोनों शामिल हैं।

अज्ञेयवाद (Agnosticism): यह विश्वास कि ईश्वर या ईश्वरों का अस्तित्व अज्ञात है और/या स्वाभाविक रूप से अज्ञेय है। इसमें दृढ़ अज्ञेयवाद यह विचार है कि ईश्वरों के अस्तित्व का प्रश्न स्वाभाविक रूप से अज्ञेय या अर्थहीन है, और अदृढ़ अज्ञेयवाद है कि देवताओं के अस्तित्व का प्रश्न वर्तमान में अज्ञात है, लेकिन स्वाभाविक रूप से अज्ञेय नहीं है।

2. हेनोथिज्म में यह विश्वास शामिल है जिसमें कई ईश्वरों का अस्तित्व मानते हुए उनमें से सिर्फ एक ईश्वर की पूजा पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। हालाँकि, हेनोथिज्म यह स्वीकृति देता है कि एक से अधिक ईश्वर पूजा के योग्य हो सकते हैं। यह 'एक' ईश्वर में विश्वास है जो एकेश्वरवाद या 'केवल एक' ईश्वर में विश्वास से अलग है। मैक्समूलर ने इसे अनकेश्वरवादी से एकेश्वरवादी विश्वास की प्रगति के एक निश्चित चरण के रूप में प्रस्तुत किया।

3. देवतावादी इस विश्वास को अपनाते हैं कि एकमात्र विद्यमान ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है और सृजित ब्रह्माण्ड से परे है। हालांकि, वे इस विश्वास को अस्वीकार करते हैं, जो पश्चिम में एकेश्वरवादियों के बीच आम है, कि यह ईश्वर जगत में अन्तर्निहित है, जिसका अर्थ है कि वर्तमान में निर्मित ब्रह्माण्ड में सक्रिय है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, ईश्वर ने ब्रह्माण्ड की रचना की लेकिन फिर इससे दूर चले गए और अपने आपको इस सृष्टि से अलग कर लिया।

4. मोनोथिज्म (एकेश्वरवाद) शब्द ग्रीक शब्द श्मोनोसश से आया है, जिसका अर्थ है 'एक', और 'थियोस', जिसका अर्थ है 'ईश्वर' इस प्रकार, एकेश्वरवाद एक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास

है। सबसे बड़ी एकेश्वरवादी धार्मिक प्रणालियाँ यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम और सिख धर्म हैं।

मोनिज्म (एकत्ववाद) एकता की उच्च अवधारणा है। एकेश्वरवादी अवधारणा, अपने विशुद्ध रूप में द्वैतवाद को शामिल करने के लिए बाध्य है। एकेश्वरवाद का उद्देश्य केवल ईश्वरत्व की एकता है– कई इश्वरों का एक में परिवर्तन जो इस जग से परे और पृथक है जिसकी रचना उसने स्वयं की और जिसका वह मार्गदर्शन करता है। एकेश्वरवाद प्रकृति को ईश्वर के विरुद्ध मानता है और इसलिए यह एक विशिष्ट अर्थ में ही एकता की लालसा को संतुष्ट कर सकता है।

5. पेंथीज्म (सर्वेश्वरवाद) शब्द ग्रीक मूल 'पैन' पर बना है जिसका अर्थ है 'सब' और 'थियोस' जिसका अर्थ है 'ईश्वर'। इस प्रकार, सर्वेश्वरवाद या तो यह विश्वास है कि ब्रह्माण्ड ईश्वर है और पूजा के योग्य है या यह कि ईश्वर सभी का कुल योग है और यह कि संयुक्त पदार्थ, बल और प्राकृतिक नियम जो हम अपने चारों ओर देखते हैं, वे ईश्वर की अभिव्यक्तियाँ हैं।

पैनेंथिज्म (सर्वातिसर्वेश्वरवाद) शब्द का अर्थ है ''ईश्वर में सब'' (पैन–एन–थियोस)। सर्वातिसर्वेश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद की तरह ही यह विश्वास है कि भौतिक ब्रह्माण्ड एक ईश्वर से जुड़ा हुआ है। हालाँकि, ये यह भी मानता है कि एक ईश्वर भौतिक ब्रह्माण्ड से बड़ा है। इस विश्वास प्रणाली के अनुसार ईश्वर प्रकृति के हर हिस्से में प्रवेश करते हैं, लेकिन साथ ही ईश्वर प्रकृति से पूरी तरह अलग हैं। तो ईश्वर प्रकृति का हिस्सा है लेकिन फिर भी एक स्वतंत्र पहचान बनाये रखता है।